



केन्द्रीय मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने भारत के पहले दो जलयात्रियों कमांडर जतिंदर पाल सिंह और श्री राजू रमेश के समुद्र में 5000 मीटर गहराई तक गोता लगाने की सराहना की

- भारत समुद्र में इतनी गहराई तक जाने की उपलब्धि हासिल करने वाले आधा दर्जन से भी कम देशों के विशिष्ट क्लब में शामिल हो गया: पृथ्वी विज्ञान मंत्री
- डॉ. जितेन्द्र सिंह ने कहा कि महासागर और अंतरिक्ष संसाधन भारत की आर्थिक उन्नति को भविष्य में प्रथम स्थान पर पहुँचाने के लिए योगदान देंगे
- एनआईओटी की 5 सदस्यीय टीम ने भारत-फ्रांस अनुसंधान सहयोग के तहत फ्रांसीसी सैन्य पनडुब्बी "नौटाइल" में गोता लगाया

Posted On: 14 AUG 2025 6:52PM by PIB Delhi

केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार); प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने घोषणा की कि 5 और 6 अगस्त, 2025 को दो भारतीय जलयात्रियों ने अटलांटिक महासागर में 4,025 मीटर और 5,002 मीटर की गहराई तक समुद्र में सफलतापूर्वक अभियान चलाए - यह पहली बार है जब भारत ने ऐसी उपलब्धि हासिल की है।

भारतीय जल यात्री - राजू रमेश, वरिष्ठ वैज्ञानिक और कमांडर जतिंदर पाल सिंह (सेवानिवृत्त) - ने लगभग सात घंटे की कुल अवधि के लिए पहला गोता पूरा किया, और सतह पर सुरक्षित वापसी से पहले बहुमूल्य अनुभव और प्रेक्षण क्षमता एकत्र की।

मीडिया को संबोधित करते हुए, डॉ. जितेन्द्र सिंह ने कहा कि भारत अब आधा दर्जन से भी कम देशों के उस विशिष्ट समूह में शामिल हो गया है जिसने समुद्र में इतनी गहराई तक जाने का साहस किया है। यह अभियान फ्रांसीसी समुद्री अनुसंधान संस्थान, आईएफआरईएमईआर के साथ एक सहयोगी वैज्ञानिक गतिविधि के रूप में, आईएफआरईएमईआर के पनडुब्बी नौटाइल पर सवार होकर, अटलांटिक महासागर के गहरे पानी में किया गया। यह रिकॉर्ड-तोड़ गोता भारत के समुद्रयान मिशन के तहत प्रारंभिक कार्य की प्रस्तावना है, जिसका उद्देश्य 2027 तक स्वदेशी रूप से विकसित पनडुब्बी मत्स्य-6000 में तीन जलयात्रियों को 6,000 मीटर की गहराई तक भेजना है।

समुद्रयान सरकार के प्रमुख डीप ओशन मिशन का हिस्सा है, जिसे गहरे समुद्र के संसाधनों की खोज और उनके निरंतर दोहन के लिए शुरू किया गया है। डॉ. सिंह ने कमांडर जतिंदर पाल सिंह की उपलब्धि पर व्यक्तिगत गर्व व्यक्त किया और कहा कि वह जम्मू से हैं—“मेरे पड़ोस के एक बेटे का भारत के लिए यह उपलब्धि हासिल

करना मेरे लिए गर्व की बात है।”

डॉ. जितेन्द्र सिंह ने यह भी बताया कि यह उपलब्धि भारतीय अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला के एएक्सआईओएम-4 मिशन के तहत अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर सफलतापूर्वक पहुँचने और वहाँ से लौटने के चार हफ्ते बाद आई है। उन्होंने कहा, "भारतीयों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन और गहरे समुद्र, दोनों की पहली सफल यात्राएँ करके, हमने अपनी वैज्ञानिक महत्वाकांक्षा, कौशल और साहस का प्रदर्शन किया है—और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के सपने के और करीब पहुँच गए हैं।"

पृथ्वी विज्ञान मंत्री ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा मिशन को दिए गए संरक्षण और प्राथमिकता को याद किया और कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2021 और 2023 में लाल किले की प्राचीर से अपने स्वतंत्रता दिवस के संबोधनों में इस पर प्रकाश डाला था। उन्होंने जोर देकर कहा कि महासागर और अंतरिक्ष भारत के भविष्य के आर्थिक विकास के दो स्तंभ होंगे और दुनिया की अग्रणी अर्थव्यवस्था बनने की राष्ट्र की आकांक्षा में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता होंगे। डॉ. सिंह ने विशेष रूप से उल्लेख किया कि दोनों मिशनों में भारत को सहयोग की पेशकश की गई है और अब हम दुनिया को केवल अनुसरण के लिए ही नहीं बल्कि क्षेत्र में अग्रणी बने रहने के लिए भविष्य के मिशनों के लिए आकर्षित कर रहे हैं।

डॉ. जितेन्द्र सिंह ने इस बात पर प्रकाश डाला कि 11,098 किलोमीटर लंबी तटरेखा और एक विशाल विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) के साथ, भारत में सजीव और निर्जीव दोनों प्रकार के समुद्री संसाधनों की अपार संभावनाएँ हैं—जो किसी भी अन्य देश को बेजोड़ प्राकृतिक लाभ प्रदान करते हैं। उन्होंने अर्थव्यवस्था में मूल्यवर्धन के लिए, विशेष रूप से नीली अर्थव्यवस्था के विकास के माध्यम से, इन अनछुए संसाधनों की खोज और दोहन हेतु ठोस प्रयासों का आह्वान किया। उन्होंने आगे बताया कि भारत ने 4,000 से 5,500 मीटर की गहराई पर गहरे समुद्र में खनिजों की खोज के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुद्र तल प्राधिकरण के साथ पहले ही एक अनुबंध पर हस्ताक्षर कर दिए हैं।

दोनों भारतीय जलयात्री राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईओटी), चेन्नई से हैं, जो पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अधीन एक संस्थान है और जिसे मत्स्य-6000 विकसित करने का दायित्व सौंपा गया है। इस पनडुब्बी के साथ, भारत दुनिया का छठा ऐसा देश बन जाएगा जिसने अपनी स्वयं की गहरे समुद्र में मानव निर्मित पनडुब्बी विकसित की है।

मत्स्य-6000 अपनी तरह का पहला है जिसे चौथी पीढ़ी की वैज्ञानिक पनडुब्बी—12 घंटे की परिचालन क्षमता और 96 घंटे तक की आपातकालीन क्षमता के लिए तैयार किया गया है। इसमें अत्याधुनिक प्रणालियाँ हैं जैसे उच्च-घनत्व वाली ली-पो बैटरी, पानी के भीतर ध्वनि संबंधी टेलीफोन, ड्रॉप-वेट आपातकालीन बचाव तंत्र, और चालक दल की सुरक्षा और स्वास्थ्य निगरानी के लिए बायो-वेस्ट।

मत्स्य-6000 ने जनवरी-फरवरी 2025 में एलएंडटी शिपयार्ड, कट्टुपल्ली, तमिलनाडु में सफल गीले परीक्षण पूरे कर लिए हैं और 2026 तक 500 मीटर उथले पानी में परीक्षण किए जाने की उम्मीद है।

एनआईओटी की पांच सदस्यीय टीम - जिसमें श्री पलानीअप्पन, डॉ. डी. सत्यनारायणन और श्री जी. हरिकृष्णन शामिल थे, जिसका नेतृत्व वैज्ञानिक जी और मत्स्य-6000 के समूह प्रमुख डॉ. रमेश सेथुरमन कर रहे थे - 3 अगस्त, 2025 को पुर्तगाल के लिस्बन के पास आईएफआईएमईआर के अनुसंधान जहाज *एलाटलांटे* पर सवार हुई।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव, डॉ. एम. रविचंद्रन ने अभियान से प्राप्त बहुमूल्य जानकारी साझा की और बताया कि टीम ने अनेक महत्वपूर्ण अभियानों में व्यापक व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया। इनमें गोता लगाने से पहले की तैयारी और पायलटिंग ऑपरेशन; एक माहौल में रहने की आदत और तैरने की क्षमता के प्रबंधन के साथ-साथ उतरने और चढ़ने की प्रक्रियाएँ; ध्वज लगाने और नमूना एकत्र करने जैसे उपकरणों का उपयोग करके हस्तक्षेप कार्य; चार गोता लगाने के दौरान तैनाती और पुनर्प्राप्ति; जहाज से प्रक्षेप पथ पर नज़र रखना; जहाज पर सहायक प्रणालियों का प्रबंधन; ध्वनिक टेलीफोन संचार प्रोटोकॉल का संचालन; साथ ही गोता लगाने की योजना, संचालन और अन्य आवश्यक परिचालन प्रक्रियाएँ शामिल थीं।

उन्होंने कहा कि एनआईओटी दल द्वारा प्राप्त अनुभव सीधे तौर पर मत्स्य-6000 के विकास में सहायक होंगे, तथा उन्होंने परियोजना के प्रमुख लक्ष्यों को रेखांकित किया, जैसे:

- टाइटेनियम पतवार, सिंटेक्टिक फोम, वीबीएस और ड्रॉप-वेट मैकेनिज्म का निर्माण और परीक्षण
- उप-प्रणालियों का खुले समुद्र में परीक्षण और प्रमाणन
- 2026 की शुरुआत तक 500 मीटर तक उथले पानी में प्रदर्शन
- एलएआरएस के साथ अनुसंधान पोत का विस्तार
- 2027 के मध्य तक एकीकरण और गहरे पानी में परीक्षण
- 2027-28 के दौरान मत्स्य-6000 का उपयोग करके वैज्ञानिक अन्वेषण

उन्होंने गहरे महासागर मिशन के व्यापक उद्देश्यों को भी दोहराया, जिसमें गहरे समुद्र में खनन और मानव पनडुब्बी विकास के साथ-साथ महासागर जलवायु परिवर्तन सलाहकार सेवाएं भी शामिल हैं।

इससे पहले, सीएसआईआर-एनआईओ के भारतीय वैज्ञानिकों ने 1997 और 2002 में क्रमशः एल्विन (अमेरिका) और नौटाइल (फ्रांस) पनडुब्बियों में 3,800 मीटर और 2,800 मीटर तक गोता लगाया था। वर्तमान अभियान भारत की गहरे समुद्र में क्षमताओं के लिए एक रिकॉर्ड-तोड़ उपलब्धि है।

राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईओटी) के निदेशक प्रो. बालाजी रामकृष्णन, डीप ओशन मिशन के निदेशक डॉ. एम.वी. रमण मूर्ति, और एनआईओटी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ वैज्ञानिक भी मीडिया से बातचीत के लिए उपस्थित थे।





पीके/केसी/केपी/डीके

(Release ID: 2156596)

Read this release in: Malayalam , English , Marathi